Dr•Manoj Kumar Singh
Assistant Professor
P.G.Deptt.of Psychology
Maharaja Bahadur Ram Ram Vijay Prasad Singh College Ara
Date; 02/02/2026
Class: U.G Semester - 4th
(MJC-5)
Abnormal Psychology,
Topic - Meaning and Definitions of Abnormal Behaviour)

ABNORMAL BEHAVIOUR

असामान्य व्यवहार का अर्थ एवं परिभाषाएँ *(Meaning and Definitions of Abnormal Behaviour)*

असामान्य व्यवहार को समझने से पूर्व सामान्य तथा असामान्य शब्द को समझना अति आवश्यक है। सामान्य शब्द को अंग्रेजी में 'नार्मल' (Normal) कहते है। 'नार्मल' शब्द की उत्पत्ति लैटिन शब्द 'नौरमा' (Norma) से हुई है जिसका अर्थ है 'मानक' (Norms) या वह व्यवहार प्रतिरूप जिसे स्वीकार कर लिया गया हो। 'नार्मल' (Normal) का हिन्दी रूपान्तरण है- 'सामान्य' ।

एब (Ab) तथा नार्मल (Normal) दो शब्दों से मिलकर बना है। 'एबनार्मल' (Abnormal) शब्द का शाब्दिक अर्थ है- 'सामान्य से दूर' (Away from Normal) अर्थात् वह व्यवहार जो सामान्य से दूर हो। इस तथ्य के आधार पर कह सकते है कि जो व्यवहार सामान्य व्यवहार से विचलित (Deviated) या भिन्न (Varient) होता है, उसे असामान्य व्यवहार की संज्ञा दी जाती है। अर्थात् जो व्यवहार सामान्य या अपेक्षित व्यवहार से अलग होता है तथा जिससे व्यक्ति को परेशानी होती है या उनके जीवन में कामकाज प्रभावित होता है। उसे असामान्य व्यवहार (Abnormal Behavior) कहते है। असामान्य व्यवहार किसी व्यक्ति के भीतर एक मनोवैज्ञानिक शिथिलता है जो काम करने में परेशानी या हानि से जुड़ी होती है और एक ऐसी प्रतिक्रिया होती है जो सामान्य या सांस्कृतिक रूप से अपेक्षित नहीं होती है। ऐसा व्यवहार व्यक्तिगत संकट का कारण बनता है और संभावित रूप से स्वयं या दूसरों के लिए हानिकारक हो सकता है। अतः असामान्य व्यवहार असमायोजित (Maladjusted) व्यवहार होता है, जो व्यक्ति एवं समूह दोनों के लिए हानिकारक है।

किस्कर के अनुसार, "वे मानव व्यवहार एवं अनुभूतियाँ जो साधारणतः अनोखे, असाधारण या पृथक है, असामान्य कहे जाते है।"

According to Kisker, "Human behaviours and experiences which are strange, unusual or different ordinarily are considered abnormal."

मंगल के अनुसार, "सामान्य शब्द का अर्थ है कि निर्धारित नियम, प्रतिरूप या मानक, जबकि 'असामान्य' शब्द का अर्थ है सामान्य से विचलित या भिन्न।"

According to Mangal, "The term 'normal' stands for a set rule, pattern or standard while 'abnormal' for the deviance or variation from the normal."

रीगर के अनुसार 'असामान्य व्यवहार, ऐसा व्यवहार होता है जो सामाजिक रूप में अमान्य दुःखदायी एवं विकृत संज्ञान के परिणामस्वरूप उत्पन्न होता है चूंकि ऐसे व्यवहार से व्यक्ति को सामान्य समायोजन में कठिनाई होती है, इसलिए इसका स्वरूप कुसमायोजी (Maladaptive) भी होता है।"

बारलो या दूरंड के अनुसार, 'असामान्य व्यवहार व्यक्ति के भीतर मनोवैज्ञानिक दुष्क्रिया की स्थिति होती है जो कार्यों में व्यथा या हानि से साहचर्चित होता है एवं एक ऐसी अनुक्रिया होती है जो प्रतिनिधिक या सांस्कृतिक रूप से प्रत्याशित नहीं होता है।"

According to Barlow & Durand, "Abnormal behavior is a psychological dysfunction within an individual that is associated with distress or impairment in functioning and response that is not typical or culturally expected."

असामान्य व्यवहार की प्रकृति एवं विशेषताएँ **(Nature and Characteristics of Abnormal Behaviour)**

असामान्य व्यक्ति द्वारा किया गया व्यवहार असामान्य व्यवहार कहलाता हैं। अतः सामान्य व्यक्ति के अध्ययन से सामान्य व्यवहार के स्वरूप या विशेषता की जानकारी होती है और इसी तरह असामान्य व्यवहार के अध्ययन से असामान्य व्यक्ति की पहचान होती है। अतः असामान्य व्यक्ति या असामान्य व्यवहार की प्रकृति एवं विशेषताओं को निम्नलिखित बिन्दुओं से स्पष्ट कर सकते है-

(1) समाज-विरोधी व्यवहार (Antisocial Behaviour) - असामान्य व्यवहार सामान्य रूप से स्वीकृत नियमों, सामाजिक मानक एवं मूल्यों का विरोधी होता है तथा सामाजिक रूप से बेमेल या अनुपयुक्त होता है। जब कोई व्यक्ति इस प्रकार का व्यवहार करता है तो उससे समाज के नियमों, मूल्यों तथा मानकों का अतिक्रमण होता है। उदाहरण के लिए चोरी करना, हत्या करना, बलात्कार करना आदि कुछ ऐसे ही व्यवहार है। अतः ऐसे व्यवहार को असामान्य व्यवहार की श्रेणी में रखा जाता हैं और ऐसे व्यवहार को करने वाले व्यक्तियों को असामान्य व्यक्ति कहते हैं।

(2) मानसिक असंतुलन (Mental Imbalance) मानसिक असंतुलन भी असामान्य व्यवहार की एक प्रमुख विशेषताओं में से एक है। ऐसे व्यक्तियों के व्यवहार तथा विचारों में अत्यधिक अस्थिरता एवं असगंतता देखी जाती है। ऐसे व्यक्ति प्रायः कभी कुछ सोचते है तो कभी कुछ, कभी-कभी तो सोचते कुछ और है तथा करते कुछ और है।

(3) अपर्याप्त समायोजन (Poor Adjustment) असामान्य व्यवहार का एक मुख्य लक्षण, समायोजन की अपर्याप्तता भी है। ऐसे व्यक्ति जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट समायोजन प्रदर्शित नहीं कर पाते है। घटिया समायोजन प्रदर्शित करने के कारण प्रायः ऐसे व्यक्ति परिवार तथा समाज में तिरस्कार के पात्र बनते है। तिरस्कार क परिणामस्वरूप कभी-कभी उनकी समस्या और भी बढ़ जाती है।

(4) सूझपूर्ण व्यवहार की कमी (Lack of Insightful Behavior)- असामान्य व्यक्ति में सूझ की प्रायः कमी पाई जाती है। इस कमी के कारण वे सही-गलत, अच्छा-बुरा तथा नैतिक-अनैतिक में अन्तर करने में असमर्थ रहते है। परिणामस्वरूप ऐसे व्यक्ति अपने दायित्वों का उचित मूल्यांकन नहीं कर पाते है। इस सबका परिणाम यह होता है कि ऐसे व्यक्ति बिना किसी हिचकिचाहट या दोष-भाव एवं पश्चाताप के विभिन्न प्रकार के समाज विरोधी व्यवहार करते जाते है। इन्हें अपनी आलोचना से भी भय नहीं लगता है।

(5) विघटित व्यक्तित्त्व (Disorganized Personality) विघटित व्यक्तित्त्व भी असामान्य व्यवहार का एक मुख्य लक्षण है। विघटित व्यक्तित्त्व से आशय संज्ञानामक(Cognitive), क्रियात्मक (Motor) एवं भावनात्मक

(Emotional) पक्षों के ताल-मेल में अभाव होने से है। वास्तव में इनका व्यक्तितत्त्व इतना अधिक विघटित (छिन्न-मिन्न) होता है कि उनके व्यवहार में किसी प्रकार की सगंतता (Consistency) रह ही नहीं जाती है साथ ही इनका व्यवहार भी इतना अविवेकी (Irrational) तथा असंतुलित हो जाता है कि दूसरे व्यक्तियों के लिए उसका सही अर्थ निकालना असमंव हो जाता है।

(6) आत्मज्ञान तथा आत्म-सम्मान की कमी (Lack of Self Knowledge and Self-esteem)-आत्मज्ञान से आशय स्वयं को तथा स्वयं के दायित्वों को समझने से है। असामान्य व्यक्ति स्वयं के द्वारा किए गए कार्य व्यवहारों के कारणों एवं उसके परिणामों से अनभिज्ञ होते है। अर्थात् ऐसे व्यक्ति अपनी योग्यताओं, क्षमताओं तथा अपने दायित्वों को नहीं जानते है और इसीलिए वह इसका सही मूल्यांकन भी नहीं कर पाते है। ऐसे व्यक्तियों में आत्म सम्मान (Self-esteem) की भी कमी दिखाई देती है। ऐसे व्यक्ति स्वयं को अनादर एवं हीनता की दृष्टि से देखते है एवं विभिन्न सामाजिक परिस्थितियों में वे स्वयं को कुसमायोजित / अपनुकूलित (Maladapted) पाते है।

(7)औसत से विचलित (Deviant from the Average)- असामान्य व्यवहार वस्तुतः औसत लोगों के व्यवहार से विचलित या भिन्न होता है। अर्थात् यह वह व्यवहार है जो किसी समाज, संस्कृति या राष्ट्र के अधिकांश व्यक्तियों के व्यवहार से भिन्न या विचलित होता है। जैसे- अधिकांश व्यक्ति रात्रि में सोने के पूर्व यह जाँच करते हैं कि घर या कमरे के दरवाजे बन्द हैं या नहीं। यदि कोई व्यक्ति रात भर इसकी जाँच करता रहे तो अवश्य ही यह व्यवहार औसत व्यक्तियों के व्यवहार से भिन्न या विचलित माना जाएगा। तथा ऐसा करने वाले व्यक्ति को असामान्य व्यक्ति कहेंगे।

(8) दूसरे के लिए हानिप्रद (Harmful for Others)- असामान्य व्यवहार की एक विशेषता यह है कि वह अन्य व्यक्तियों के लिए हानिप्रद एवं कष्टकर (Troublesome) होता है। जब असामान्य व्यवहार साधारण होता है तो दूसरों के लिए अपेक्षाकृत कम कष्टकर होता है। इसके विपरीत अधिक गम्भीर असामान्य व्यवहार दूसरों के लिए अधिक कष्टदायक होता है। उदाहरण के लिए स्नायुविकृति (neurosis) के रोगियों के व्यवहारों से परिवार, समाज तथा राष्ट्र को बहुत कम नुकसान तथा मानसिक दुर्बलता (Mental Retardation) तथा मनोविकृति के (Psychosis) रोग से ग्रसित व्यक्तियों के व्यवहार से परिवार, समाज तथा राष्ट्र को भारी नुकसान होता है। लेकिन यहाँ यह कह देना भी आवश्यक है कि कुछ असामान्य व्यवहार या व्यक्ति ऐसे होते हैं, जिनसे समाज, राष्ट्र तथा सम्पूर्ण मानव समाज लाभान्वित होता है।

(9)स्वयं के लिए हानिप्रद (Harmful for Himself)- असामान्य व्यवहार को प्रदर्शित करने वाले व्यक्ति भी स्वयं के व्यवहार से आहत होते हैं। अतः असामान्य व्यवहार दूसरों के साथ-साथ स्वयं के लिए भी कष्टकर तथा हानिप्रद होता है। उदाहरण के लिए-गम्भीर असामान्यता (Severe Abnormality) की स्थिति में व्यक्ति संज्ञानात्मक एवं संवेगात्मक विकृतियों (Cognitive and Emotional Disorders) आदि का शिकार हो जाता है तथा अपनी जीविका चलाने एवं अपने अस्तित्व को कायम रखने में असमर्थ हो जाता है। साधारण असामान्यता से पीड़ित लोग भी अपने परिवार तथा समाज में अभियोजित नहीं हो पाते हैं और चिन्ता (Anxiety), द्वन्द्व (Conflict) एवं तनाव (Tension) से इतना ग्रसित हो जाते हैं कि उनके लिए उनका जीवन कष्टकर तथा बोझिल बन कर रह जाता है।

—-----------------------------------